

RNI No.-UPHIN/2018/77043

ISSN : 2582-2624

भावक

हिंदी साहित्य : सृजन एवं चिंतन के विविध आयामों पर केंद्रित

खंड-1, अंक-3; चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

भावक

हिंदी साहित्य : सृजन एवं चिंतन के विविध आयामों पर केंद्रित
खंड-1, अंक-3; चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019

संरक्षक

डॉ. कमल किशोर गोयनका
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. रामवीर सिंह
विभागाध्यक्ष, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रो. जय सिंह 'नीरद'

पूर्व निदेशक
क. मु. हिंदी तथा भाषा विज्ञान,
विद्यापीठ, आगरा
ई-मेल : prof.jaisingh@gmail.com

प्रो. रामसजन पाण्डेय

पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी)
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक
ई-मेल : drramsajanpandey@gmail.com

प्रो. चंदन कुमार

हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ई-मेल : dr.chandanchaubey@gmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक

डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : drjyotsnar@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह
हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
ई-मेल : singhypad@gmail.com

डॉ. विवेकानंद उपाध्याय

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
ई-मेल : vivekanand27@gmail.com

डॉ. मीनाक्षी दुबे

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

श्री अनुपम श्रीवास्तव

सहायक प्रोफेसर, सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : anupamhindi.khs@gmail.com



अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005

अनुक्रम

● प्रधान संपादक की कलम से		
श्रीपद अंकित ब्रज मही	नन्द किशोर पाण्डेय	05-09
● संपादकीय	ज्योत्स्ना रघुवंशी	10-10
1. वैश्विक परिदृश्य में भक्ति आंदोलन	लक्ष्मी पाण्डेय	11-18
2. सूर की काव्य साधना	रामवीर सिंह	19-27
3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय दर्शन	नीलाम कुमार	28-31
4. परम्परा का सातत्य : छायावाद	शिव प्रसाद शुक्ल	32-38
5. जातीय चेतना के पुरोधा : राजा लक्ष्मण सिंह	ज्योत्स्ना रघुवंशी	39-47
6. त्रिलोचन के काव्य में किसान- जीवन का यथार्थ	राजेश कुमार	48-54
7. सफलता की राह में रिश्तों का भोज : चीफ की दावत	हितेन्द्र कुमार मिश्र	55-61
8. डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' की काव्य यात्रा	सभापति मिश्र	62-71
9. हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा का अंतःसंबंध	अमरेन्द्र त्रिपाठी	72-78
10. भाषा का समाजशास्त्रीय अध्ययन	मलखान सिंह	79-84
11. साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ ड्राइडन की दृष्टि में	कृष्णदत्त शर्मा	85-97
12. कोश ग्रंथ-अनुवाद के लिए आवश्यक उपकरण	विमलेश कान्ति वर्मा	98-102

'भावक'

चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019 | 3

वैश्विक परिदृश्य में भक्ति आन्दोलन

—लक्ष्मी पाण्डेय

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति काल स्वर्ण काल की तरह स्मरणीय है। यह ऋषितुल्य संत कवियों के लोकमंगलकारी रचनात्मक प्रयासों के कारण पूज्य है। कबीर, तुलसीदास, सूरदास तथा अन्य भक्त कवि अपने आराध्य के निर्गुण-सगुण रूप की एकांत सारस्वत साधना में तल्लीन होकर स्वान्तः सुखाय जो कुछ रचते रहे वह लोकमंगलकारी, प्रेरक तथा जीवनदायिनी औषधि बनता गया। मुगलों, पठानों तथा जाने किन-किन शत्रुओं के आक्रमणों, अत्याचारों से पीड़ित भारतीय समाज अपने भीतर भी जाति-पाँति, छुआ-छूत, धर्माधता, अशिक्षा, गरीबी आदि अन्य अनेक बीमारियों से मृतप्राय था। ऐसे में कबीर की निर्गुण भक्ति और एकेश्वरवाद ने उन्हें एकता के सूत्र में बाँधकर शत्रु के खिलाफ एकजुट होना सिखाया। तुलसी ने संयम, त्याग, आस्था, निष्ठा, परदुःखकातरता की सीख देकर आदर्श मनुष्य, आदर्श राजा की परिभाषा दी। सूर, मीरा, रसखान, रहीम ये सभी अपने-अपने क्षेत्र में, अपने-अपने दायरों में रहकर वैश्विक धरोहर रच रहे थे। अपने-अपने अस्तित्व की विराटता और महानता से अनजान ये ऋषि विनम्र, उदार, वत्सल भाव धारण किए धरती का उपकार कर रहे थे। इनमें आपस में भी आदर और सद्भाव था, कोई बैर, ईर्ष्या या प्रतिद्वन्द्विता का भाव नहीं था। 'आंदोलन' शब्द तब प्रचलन में नहीं था कि ये अपनी विचारधारा के द्वारा आंदोलन चलाने का विचार करते। इनका पवित्र उद्देश्य था—लोक सुखी हों, सब मिल-जुल कर एक होकर रहें, कोई किसी से घृणा न करे, लोग धर्माधता, कुरीतियों से बचें, जागरूक और चेतनावान हों। आंदोलन शब्द आधुनिक काल में आलोचकों-समीक्षकों ने प्रयोग किया और भक्ति काल के सामूहिक प्रयासों को भक्ति आंदोलन का नाम दिया।

वैश्विक परिदृश्य में भक्ति आंदोलन का प्रभाव गहन और व्यापक है। यह अंतःसलिला सरस्वती की तरह अदृश्य रहकर इस इक्कीसवीं सदी में भी बिना कोई आंदोलन का रूप धारण किए, बिना किसी प्रचार-प्रसार के विश्वजन के जीवन को आदर्श दिशा दे रहा है। थाईलैंड, श्रीलंका, चीन, जापान आस्ट्रेलिया आदि अनेक देशों में राम, कृष्ण, बुद्ध के मंदिरों का होना, विश्व की भारतीय धर्म दर्शन के प्रति निष्ठा और झुकाव को दर्शाता है। यह किसी एक भाषा या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। आधुनिक

‘भावक’

चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019 | 11